भारतीय संस्कृति, कला और संगीत में संबंध

प्रियंका चौहान

शोधार्थी,

आर0जी0 पी0जी0 कालिज, मेरठ

Email: showhitepink15@gmail.com

Reference to this paper should be made as follows:

प्रियंका चौहान

''भारतीय संस्कृति, कला और संगीत में संबंध''

Artistic Narration 2020, Vol. XI, No. 1, pp. 66-69

https://anubooks.com/?page_id=6863

सारांश

लौकिक, परलौकिक, धार्मिक, राजनैतिक, आर्थिक या सामाजिक अभ्युदय आदि से बुद्धि, मन जो प्रभाव ग्रहण करते हैं, वहीं संस्कार किसी सांस्कृति का निर्माण करते हैं। भारत की संस्कृति विश्व की सबसे प्राचीन एवं सम्रंध संस्कृतियों में से एक है। ललित कलाओं के माध्यम से ही संस्कृति हमारे जीवन में अभिव्यक्ति पाती है। साहित्य, संगीत और कला की सम्पूर्ण विधाओं के माध्यम से भी भारतीय संस्कृति के इस आध्यात्मिक एवं भौतिक समन्वय को सरलतापूर्वक समझा जा सकता है। ललित कलाओं में संगीत का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण है एवं इसे एक पवित्र अनुभूति माना गया है। संसार भर में सामवेद में सबसे प्राचीन संगीत मिलता है और सामवेद को संगीत का वेद माना गया है।

देवताओं की इस भूमि पर संस्कृति, रिवाज और परम्परा से लेकर बहुत कुछ खास रहा है। भारत के सांस्कृतिक जीवन में संगीत का विशेष स्थान है। धार्मिक और सामाजिक परम्परा में संगीत का प्रचलन प्राचीन काल से रहा है। इसी रूप में संगीत को भारतीय संस्कृति और सभ्यता की आत्मा माना गया है और मानव जीवन में इसकी भूमिका सकारात्मक है। हमें भारतीय संस्कृति, कला और संगीत के परस्पर संबंण का प्रमाण वैदिक काल से मिलता रहा है।

मुख्य शब्दः *संस्कृति, ललितकला, भारतीय संगीत, वेद।*

प्रस्तावना

मनुष्य की अमूल्य निधि उसकी संस्कृति है और संस्कृति इतिहास का दर्पण होता है। मानव समाज के धार्मिक, दार्शनिक, कलात्मक, नीतिगत विषयक कार्यकलापों, परम्परागत प्रथाओं, खान–पान, संस्कार इत्यादि के समन्वय को संस्कृति कहा जाता है। अनेक विद्वानों ने संस्कार के परिवर्तित रूप को ही संस्कृति स्वीकार किया है। भारतीय संस्कृति विश्व की सबसे प्राचीन संस्कृतियों में से एक है तथा भारत अनेकता में एकता के सूत्र में बंधा है। यहां कि जीवन में विविधता एवं विभिन्नता परिलक्षित होते हुए भी सांस्कृतिक एकता यहां के लोगों के जीवन में व्याप्त है। यही भारतीय संस्कति की मुख्य विशेषता है।

भारतीय संस्कृति को देव संस्कृति कहकर सम्मानित किया गया है। हमेशा से ही भारतीय कलायें इसकी सांस्कृतिक और परम्परागत प्रभावशीलता को अभिव्यक्त करने का माध्यम बने रहे हैं इसीलिए इसे विश्व को सभी संस्कृतियों की जननी कहा जाता है।

जीने की कला हो या वैज्ञानिक और राजनीतिक क्षेत्र, भारत का स्थान सदैव विशेष रहा है। अन्य देश की संस्कृति तो समय के साथ नष्ट होती रही किन्तु भारत की संस्कृति आदि काल से ही अपने परम्परागत अस्तित्व के साथ अजर अमर बनी हुई है। हमारे गीत, संगीत, नृत्य, रंगमंच, लोक परम्परा, प्रदर्शन कलाओं, संस्कार, चित्रकला और लेखन के लिये पूरे विश्व में 'अमूर्त सांस्कृतिक विरासत' के रूप में जाना जाता है।

भारत की लोक और जनजातीय कलाएं बहुत ही पारम्परिक और साधारण होने पर भी इतनी सजीव और प्रभावशाली है कि उनसे देश की समृद्ध विरासत का अनुमान सवतः हो जाता है।

उन्नत संस्कृति से ही कलाओं का विकास होता है। भारतीय कला और संस्कृति पूरे विश्व में लोकप्रिय है। जीवन, ऊर्जा का महासागर है। जब अंतश्चेतना जागृत होती है जो ऊर्जा जीवन को कला के रूप में उभरती है। कला जीवन को सत्यम, शिवत, सुन्दरम से समन्वित करती है।

कला उस क्षितिज की भांति है जिसका कोई छोर नहीं है और इसने अनेक विशाल विधाओं को अपने में समेटा हुआ है तभी कवि ने कहा है– साहित्य संगीत कला विहीलः साक्षात् पशुः पुच्छ विषाणहीनः।।

रवीन्द्रनाथ ठाकुर जी ने कहा है कि ''कला में मनुष्य अपने भावों की अभिव्यक्ति करता है।'' वहीं प्लेटो ने भी कहा है ''कला सत्य की अनुकृति के अनुकृति है।''

भारतीय संस्कृति के मूल तत्वें में जीवन–मरण बोध, मानव मात्र में बंधुत्व, पारिवारिक जीवन, पाप–पुण्य, जन्म–पूर्वजन्म, कर्म–चारण, मुक्ति का मार्ग, दार्शनिकता, आध्यात्मिकता, सौन्दर्यपसना, कलात्मक लालित्य संगीत, स्थापत्य, चित्रकला, नृत्य और काव्यकला आदि को रखा जा सकता है। ये तत्व ही हमारी संस्कृति का मूल आधार है। हमेशा से भी भारत की कलायें इसकी सांस्कृति और परम्परागत प्रभावशीलता को अभिव्यक्त करने का माध्यम बने रहे हैं। देश भर में फैले इसे राज्य और संघराज्य क्षेत्रों की अपनी विशेष सांस्कृतिक और पारम्परिक पहचान है, जो वहां प्रचलित कला के भिन्न–भिन्न रूपों में दिखाई देती है।

प्रियंका चौहान

कलायें मानव जीवन को रसीला बनाती है तथा कला के द्वारा ही जीवन दायनी ऊर्जा का संचार होता है जो मानव जीवन को सकारात्मक दिशा देती हैं एवं तनाव मुक्त रहने में सहायक होती है।

प्राचीन समय से ही, भारत की आध्यात्मिक भूमि ने अलग–अलग धर्म की संस्कृति व अलग–अलग उन जातिय वर्गों के अस्तित्व की गवाही देती है जो यद्यपि एक राष्ट्र के पवित्र गृह में रहते हैं परन्तु विभिन्न सामाजिक रिवाजों और अभिलक्ष्णों को मानते हैं। भारत की क्षेत्रीय सीमाएं इन जातीय वर्गों में उनकी अपनी सामाजिक व सांस्कृतिक पहचान के आधार पर भेद करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

कला संस्कृति की परिचायक है। भारतीय संस्कृति के विविधि आयामों में व्याप्त मानवीय एवं रसात्मक तत्व उसके कलारूपों में प्रकट हुए हैं। भारत में प्रचलित 64 ललित कलायें सुप्रसिद्ध हैं। सौन्छर्य या ललित्य के आश्रय से व्यक्त होने वाली कलायें, ललित कला कहलाती है अर्थात वह कला जिसके अभिव्यंजन में सौंदर्य की अपेक्षा हो और जिसकी सृष्टि मुख्यतः मलोविनोद के लिए हो। कला संस्कृति का अभिन्न अंग है। इन्हीं ललित कलाओं ने हमारी संस्कृति के सत्यम शिवम सुंदरम जैसे सकारात्मक पक्षों को चित्रित किया है।

यह कहना ठीक हर होगा कि कला ही राष्ट्र का जीवन है। भारतीय कला जहां एक ओर वैज्ञानिक और तकनीकी आधार रखती है, वहीं दूसरी ओर भाव एवं रस को सदैव प्राणतत्व बनाकर रखती है। भारतीय कला को जानने के लिये शास्त्र, पुराण, वुद, उपवेद, पुरातत्व और प्राचीन साहित्य का सहारा लेना पड़ता है। कला का मानक कला स्वरूप अपने आप में पिहित है। भारतीय कला में परम्परा का सर्वत्र सम्मान हुआ है किन्तु किसी भी काल में अंधानुकरण को आश्रय नहीं दिया गया। भारतीय कला में ब्राह्य सौन्दर्य के साथ आन्तरिक सौन्दर्य के भाव की प्रधानता है।

कला सीमाओं में रहकर असीम होती है और यह उसकी चमत्कार पूर्ण विशेषता है। संगीत एक ऐसी भाव प्रधान कला है जिसकी ये विशेषता मानवेतर प्राणियों को ही नहीं अपितु प्रकृति के तत्वों तक को भी अपने प्रभाव का क्षेत्र बना लेती हैं।

देश को जोड़ने में संस्कृति व संगीत की महत्वूपर्ण भूमिका, एक भारत, श्रेष्ठ भारत, को साकार करने की दिशा में यह एक बड़ा कदम

–पीएम मोदी

संगीत का ललित कलाओं में प्रमुख स्थान रहा है। यह कला भौतिक उत्कर्या एवं यश के अलावा आध्यात्मिक सुखसंतोष का भी साधन मानी गयी है।ललित कलायें ही ब्रह्मा के सौंदर्य पक्ष को श्रेष्ठ रूप में अभिव्यक्त करती हैं। सम्पूर्ण कला विधाओं में संगीत एक ऐसी कला है जो पूरे विषय को प्रभावित करती है। गान रस का पान बड़े छोटे, पशु प्राणी सभी को प्रिय होता है, साथ ही संगीत का आमद प्राप्त करने के लिए उसके विशेष ज्ञान का होना भी आवश्यक नहीं होता। जिस प्रकार भारत की सभी ज्ञान शाखाओं की जानकारी हमें वेदों से प्राप्त होती है, उसी प्रकार हम संगीत का विवरण वेदों से पा लेते हैं। सामवेद भारतीय संगीत कला का प्राचीनतम निर्देशन है।

संगीत कला को गंधर्व विधा कहा गया है, जिसमें गायन व वादन दोनों अंतभुर्त हैं। पेशेवर संगीतकार कोसुत, मगध, वंदी, पेशेवर महिलाओं को वीरांगना की संज्ञा दी गयी। ललित कला जब संगीत

कला के रूप में उभरती है तो कलाकार गायन, वादन व नृत्य से केवल स्वयं को ही नहीं बल्कि श्रोताओं को भी अभिभूत कर देता है। संगीत में स्वर और लय के द्वारा हम अपने भावों को प्रकट करते हैं। साधारण बोलचाल की भाषा में संगीत को केवल गायन समझा जाता है। किन्तु संगीत के अन्तर्गत गायन, वादन व नृत्य तीनों का समावेश है। इस ललित कला की उत्पत्ति के लिए केवल शब्द अथवा नाद ही इस कला के आधार है।

भारतवर्ष की सभी सभ्यता में संगीत का बड़ा महत्व रहा है। संगीत न केवल हमारी जीवन शैली है बल्कि हमारी सम्पूर्ण शक्ति का अनुपम स्रोत्र भी है। हमारा सम्पूर्ण अध्यात्म किसी प किसी रूप में संगीत पर ही आधारित है। संगीत में अदभुत शक्ति है इसमें अमरत्व या चमत्कार है, संगीत की महत्ता को दर्शाते हुये महापुरूषों ने भी कुछ ऐसा ही कहा है–सादी के अनुसार संगीत के पीछे पीछे खुदा चलता है।

महात्मा गांधी का कथन है के मधुर संगीत आत्मा के ताप मन को शान्त कर देता है।

प्रसिद्ध विद्वान लांगफेलो का मानना है कि संगीतमानव की विश्व व्यापी भाषा है यानि संगीत की कोई एक भाषा व कोई सीमा नहीं है। वो हमारी प्रकृति की तरह ही सब पर सामान दृष्टि रखता है।

संगीत व्यक्ति की आत्मा से निकलता है और आत्मा से जुड़ता है। संगीत की विशेषताओं का वर्णन करते हुए कारलाइन ने एक स्थान पर लिखा है कि Music is well said to be speech of angels" अर्थात संगीत को फरिश्तों की भाषा ठीक ही कहा गया है।

मेरा मानना है कि संगीत एक शास्त्र है जो बिना योग और कठिन साधना के सिद्ध नही हो पाता। जो इसको सिद्ध कर लेता है उसकी प्रकृति भी सिद्ध हो जाती है क्योंकि सच्चा संगीत प्रकृति क विभिन्न रंगों और नियमों से ही प्रेरित है फिर वो संगीत चाहे लोक हो या शास्त्रीय।

उपरोक्त सम्पूर्ण विवेचन भारतीय संस्कृति, कला और संगीत के परस्पर संबंध को स्पर्श करती है।

संदर्भ ग्रंथ

1. प0 जगदीश नारायण पाठक, संगीत निबंध माला, पृ 75–78।
2. आर्या सूर्यमणि त्रिपाठी, संगीत पत्रिका, मानव कल्याण में संगीत की भूमिका, पृ0 3–5
3. प0 जगदीश नारायण पाठक, संगीत निबंध माला, पृ 174–175।
4. के0 वासुदेव शास्त्री, संगीत शास्त्र शास्त्र वतरन, प्रकाश्ज्ञन शाखा, सूचना विभाग, उ0प्र0, पृ 1–7
5. ले0 डा0 राजेन्द्रनाथ सिंह, संगीत पत्रिका, ज्ञानसंगीत, पृ0 35–41